

विचार बिन्दु

त्याग यह नहीं कि मोटे और खुरदरे वस्त्र पहन लिए जायें और सूखी रोटी खायी जाये, त्याग तो यह है कि अपनी इच्छा अभिलाषा और तृष्णा को जीता जाये। -सुफियान सौरी

आस्था केन्द्र गंगा-जमुना जल स्तर को बनाए रखने में बढ़ता तापमान बड़ी चुनौती

यदि इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ रिमोट सेंसिंग के वरिष्ठ वैज्ञानिकों की माने तो बढ़ते तापमान का असर आने वाले दिनों में तेजी से देखा जाएगा। संभावना तो यहां तक व्यक्त की जा रही है कि यही हालात रहे तो जीवन-दायिनी गंगा-जमुना नदी में जल स्तर कम होगा और हालात यहां तक हो सकते हैं कि गंगा-जमुना के बहाव क्षेत्र में तेजी से पानी का स्तर कम होगा। यहां तक कि इस क्षेत्र में पानी का संकट तक आ सकता है। यह चेतावनी आज की नहीं है अपितु भूवैज्ञानिकों व पर्यावरण विज्ञानियों द्वारा लंबे समय से दी जाती रही है। प्रकृति लगातार डेढ़-दो दशक से चेताती जा रही है पर अनदेखा किया जा रहा है। जिस तरह से आज हिमालय क्षेत्र भूगर्भीय हलचलों का केन्द्र बनता जा रहा है उससे प्रभावित हो रहा है पहले ऐसा नहीं हुआ है। गंगा-जमुना में हिमालय पर्वत माला श्रृंखला में सर्वाधिक भूगर्भीय हलचल देखने को मिल रही है। साल में एक दो नहीं अपितु आये दिन धरती हिलने लगी है। भूस्खलन होने लगे हैं। साल में एक दो बार तो बड़े भूस्खलन आम होते जा रहे हैं। देवभूमि आज भूगर्भीय हलचल का केन्द्र बन गई है। हिमालय श्रृंखला के ग्लेशियर तेजी से पिघल रहे हैं। यहां तक कि हिमालयी श्रृंखला से निकलने वाली नदियों के उद्गम स्थल लगातार पीछे किकसके जा रहे हैं। पिछले सालों में विनाश के भयावह हालातों से हम रुबरह चुके हैं।

दरअसल गंगा-जमुना के उद्गम स्थल या यों कहें कि संपूर्ण उत्तरांचल क्षेत्र जिसमें चार धाम आते हैं, सनातन काल से आस्था का केन्द्र रहे हैं। इनकी अपनी अहमियत रही है तो प्राकृतिक संतुलन बनाए रखने में भी हिमालय क्षेत्र की अपनी भूमिका रही है। समय का बदलाव देखिये कि यहां तक तो सब ठीक है कि इस क्षेत्र का तेजी से विकास हुआ है। आज चारधाम की यात्रा सहज और आम आदमी की पहुंच में आई है। मुझे और मेरी जैसी पुरानी पीढ़ी के लोगों को अच्छी तरह से याद है कि चार धाम की यात्रा पर जाने से पहले और यात्रा से सफुशल वापसी पर वृहद आयोजन होते थे। हमने तो यहां तक देखा है कि गंगाजी की यात्रा करने पर चाहे वह हरिद्वार की हो या ऋषिकेश की गंगाजल के पूजन का भव्य आयोजन होता था जिसे गंगोत्र के नाम से जाना जाता था। घर-परिवार और नाते-रिश्तेदार जुटते थे, पूजन-हवन होता था और फिर सहभोज तो होना ही था। आज परिस्थितियों में बदलाव आया है। गंगा-जमुना का यह पवित्र क्षेत्र आज आस्था से अधिक पर्यटन का केन्द्र बन गया है। लोग घूमने के बहाने जाते हैं। यहां तक तो ठीक कहा जा सकता है पर जिस तरह से प्रतिबंधित वस्तुओं खासतौर से प्लास्टिक और इसी तरह की सामग्री का कचरा केन्द्र बनाने से पर्यावरणीय प्रदूषण की समस्या आम हो गई है। लोग चंद घंटों के लिए जाते हैं और प्लास्टिक कचरा और अन्य सामग्री वहां छोड़ आते हैं। इसी तरह से विकास के नाम पर जिस तरह से कंक्रीट

रिश्तेदार जुटते थे, पूजन-हवन होता था और फिर सहभोज तो होना ही था। आज परिस्थितियों में बदलाव आया है। गंगा-जमुना का यह पवित्र क्षेत्र आज आस्था से अधिक पर्यटन का केन्द्र बन गया है। लोग घूमने के बहाने जाते हैं। यहां तक तो ठीक कहा जा सकता है पर जिस तरह से प्रतिबंधित वस्तुओं खासतौर से प्लास्टिक और इसी तरह की सामग्री का कचरा केन्द्र बनाने से पर्यावरणीय प्रदूषण की समस्या आम हो गई है। लोग चंद घंटों के लिए जाते हैं और प्लास्टिक कचरा और अन्य सामग्री वहां छोड़ आते हैं। इसी तरह से विकास के नाम पर जिस तरह से कंक्रीट

रिश्तेदार जुटते थे, पूजन-हवन होता था और फिर सहभोज तो होना ही था। आज परिस्थितियों में बदलाव आया है। गंगा-जमुना का यह पवित्र क्षेत्र आज आस्था से अधिक पर्यटन का केन्द्र बन गया है। लोग घूमने के बहाने जाते हैं। यहां तक तो ठीक कहा जा सकता है पर जिस तरह से प्रतिबंधित वस्तुओं खासतौर से प्लास्टिक और इसी तरह की सामग्री का कचरा केन्द्र बनाने से पर्यावरणीय प्रदूषण की समस्या आम हो गई है। लोग चंद घंटों के लिए जाते हैं और प्लास्टिक कचरा और अन्य सामग्री वहां छोड़ आते हैं। इसी तरह से विकास के नाम पर जिस तरह से कंक्रीट

रिश्तेदार जुटते थे, पूजन-हवन होता था और फिर सहभोज तो होना ही था। आज परिस्थितियों में बदलाव आया है। गंगा-जमुना का यह पवित्र क्षेत्र आज आस्था से अधिक पर्यटन का केन्द्र बन गया है। लोग घूमने के बहाने जाते हैं। यहां तक तो ठीक कहा जा सकता है पर जिस तरह से प्रतिबंधित वस्तुओं खासतौर से प्लास्टिक और इसी तरह की सामग्री का कचरा केन्द्र बनाने से पर्यावरणीय प्रदूषण की समस्या आम हो गई है। लोग चंद घंटों के लिए जाते हैं और प्लास्टिक कचरा और अन्य सामग्री वहां छोड़ आते हैं। इसी तरह से विकास के नाम पर जिस तरह से कंक्रीट

रिश्तेदार जुटते थे, पूजन-हवन होता था और फिर सहभोज तो होना ही था। आज परिस्थितियों में बदलाव आया है। गंगा-जमुना का यह पवित्र क्षेत्र आज आस्था से अधिक पर्यटन का केन्द्र बन गया है। लोग घूमने के बहाने जाते हैं। यहां तक तो ठीक कहा जा सकता है पर जिस तरह से प्रतिबंधित वस्तुओं खासतौर से प्लास्टिक और इसी तरह की सामग्री का कचरा केन्द्र बनाने से पर्यावरणीय प्रदूषण की समस्या आम हो गई है। लोग चंद घंटों के लिए जाते हैं और प्लास्टिक कचरा और अन्य सामग्री वहां छोड़ आते हैं। इसी तरह से विकास के नाम पर जिस तरह से कंक्रीट

रिश्तेदार जुटते थे, पूजन-हवन होता था और फिर सहभोज तो होना ही था। आज परिस्थितियों में बदलाव आया है। गंगा-जमुना का यह पवित्र क्षेत्र आज आस्था से अधिक पर्यटन का केन्द्र बन गया है। लोग घूमने के बहाने जाते हैं। यहां तक तो ठीक कहा जा सकता है पर जिस तरह से प्रतिबंधित वस्तुओं खासतौर से प्लास्टिक और इसी तरह की सामग्री का कचरा केन्द्र बनाने से पर्यावरणीय प्रदूषण की समस्या आम हो गई है। लोग चंद घंटों के लिए जाते हैं और प्लास्टिक कचरा और अन्य सामग्री वहां छोड़ आते हैं। इसी तरह से विकास के नाम पर जिस तरह से कंक्रीट

रिश्तेदार जुटते थे, पूजन-हवन होता था और फिर सहभोज तो होना ही था। आज परिस्थितियों में बदलाव आया है। गंगा-जमुना का यह पवित्र क्षेत्र आज आस्था से अधिक पर्यटन का केन्द्र बन गया है। लोग घूमने के बहाने जाते हैं। यहां तक तो ठीक कहा जा सकता है पर जिस तरह से प्रतिबंधित वस्तुओं खासतौर से प्लास्टिक और इसी तरह की सामग्री का कचरा केन्द्र बनाने से पर्यावरणीय प्रदूषण की समस्या आम हो गई है। लोग चंद घंटों के लिए जाते हैं और प्लास्टिक कचरा और अन्य सामग्री वहां छोड़ आते हैं। इसी तरह से विकास के नाम पर जिस तरह से कंक्रीट

रिश्तेदार जुटते थे, पूजन-हवन होता था और फिर सहभोज तो होना ही था। आज परिस्थितियों में बदलाव आया है। गंगा-जमुना का यह पवित्र क्षेत्र आज आस्था से अधिक पर्यटन का केन्द्र बन गया है। लोग घूमने के बहाने जाते हैं। यहां तक तो ठीक कहा जा सकता है पर जिस तरह से प्रतिबंधित वस्तुओं खासतौर से प्लास्टिक और इसी तरह की सामग्री का कचरा केन्द्र बनाने से पर्यावरणीय प्रदूषण की समस्या आम हो गई है। लोग चंद घंटों के लिए जाते हैं और प्लास्टिक कचरा और अन्य सामग्री वहां छोड़ आते हैं। इसी तरह से विकास के नाम पर जिस तरह से कंक्रीट

रिश्तेदार जुटते थे, पूजन-हवन होता था और फिर सहभोज तो होना ही था। आज परिस्थितियों में बदलाव आया है। गंगा-जमुना का यह पवित्र क्षेत्र आज आस्था से अधिक पर्यटन का केन्द्र बन गया है। लोग घूमने के बहाने जाते हैं। यहां तक तो ठीक कहा जा सकता है पर जिस तरह से प्रतिबंधित वस्तुओं खासतौर से प्लास्टिक और इसी तरह की सामग्री का कचरा केन्द्र बनाने से पर्यावरणीय प्रदूषण की समस्या आम हो गई है। लोग चंद घंटों के लिए जाते हैं और प्लास्टिक कचरा और अन्य सामग्री वहां छोड़ आते हैं। इसी तरह से विकास के नाम पर जिस तरह से कंक्रीट

रिश्तेदार जुटते थे, पूजन-हवन होता था और फिर सहभोज तो होना ही था। आज परिस्थितियों में बदलाव आया है। गंगा-जमुना का यह पवित्र क्षेत्र आज आस्था से अधिक पर्यटन का केन्द्र बन गया है। लोग घूमने के बहाने जाते हैं। यहां तक तो ठीक कहा जा सकता है पर जिस तरह से प्रतिबंधित वस्तुओं खासतौर से प्लास्टिक और इसी तरह की सामग्री का कचरा केन्द्र बनाने से पर्यावरणीय प्रदूषण की समस्या आम हो गई है। लोग चंद घंटों के लिए जाते हैं और प्लास्टिक कचरा और अन्य सामग्री वहां छोड़ आते हैं। इसी तरह से विकास के नाम पर जिस तरह से कंक्रीट

रिश्तेदार जुटते थे, पूजन-हवन होता था और फिर सहभोज तो होना ही था। आज परिस्थितियों में बदलाव आया है। गंगा-जमुना का यह पवित्र क्षेत्र आज आस्था से अधिक पर्यटन का केन्द्र बन गया है। लोग घूमने के बहाने जाते हैं। यहां तक तो ठीक कहा जा सकता है पर जिस तरह से प्रतिबंधित वस्तुओं खासतौर से प्लास्टिक और इसी तरह की सामग्री का कचरा केन्द्र बनाने से पर्यावरणीय प्रदूषण की समस्या आम हो गई है। लोग चंद घंटों के लिए जाते हैं और प्लास्टिक कचरा और अन्य सामग्री वहां छोड़ आते हैं। इसी तरह से विकास के नाम पर जिस तरह से कंक्रीट

रिश्तेदार जुटते थे, पूजन-हवन होता था और फिर सहभोज तो होना ही था। आज परिस्थितियों में बदलाव आया है। गंगा-जमुना का यह पवित्र क्षेत्र आज आस्था से अधिक पर्यटन का केन्द्र बन गया है। लोग घूमने के बहाने जाते हैं। यहां तक तो ठीक कहा जा सकता है पर जिस तरह से प्रतिबंधित वस्तुओं खासतौर से प्लास्टिक और इसी तरह की सामग्री का कचरा केन्द्र बनाने से पर्यावरणीय प्रदूषण की समस्या आम हो गई है। लोग चंद घंटों के लिए जाते हैं और प्लास्टिक कचरा और अन्य सामग्री वहां छोड़ आते हैं। इसी तरह से विकास के नाम पर जिस तरह से कंक्रीट

रिश्तेदार जुटते थे, पूजन-हवन होता था और फिर सहभोज तो होना ही था। आज परिस्थितियों में बदलाव आया है। गंगा-जमुना का यह पवित्र क्षेत्र आज आस्था से अधिक पर्यटन का केन्द्र बन गया है। लोग घूमने के बहाने जाते हैं। यहां तक तो ठीक कहा जा सकता है पर जिस तरह से प्रतिबंधित वस्तुओं खासतौर से प्लास्टिक और इसी तरह की सामग्री का कचरा केन्द्र बनाने से पर्यावरणीय प्रदूषण की समस्या आम हो गई है। लोग चंद घंटों के लिए जाते हैं और प्लास्टिक कचरा और अन्य सामग्री वहां छोड़ आते हैं। इसी तरह से विकास के नाम पर जिस तरह से कंक्रीट

रिश्तेदार जुटते थे, पूजन-हवन होता था और फिर सहभोज तो होना ही था। आज परिस्थितियों में बदलाव आया है। गंगा-जमुना का यह पवित्र क्षेत्र आज आस्था से अधिक पर्यटन का केन्द्र बन गया है। लोग घूमने के बहाने जाते हैं। यहां तक तो ठीक कहा जा सकता है पर जिस तरह से प्रतिबंधित वस्तुओं खासतौर से प्लास्टिक और इसी तरह की सामग्री का कचरा केन्द्र बनाने से पर्यावरणीय प्रदूषण की समस्या आम हो गई है। लोग चंद घंटों के लिए जाते हैं और प्लास्टिक कचरा और अन्य सामग्री वहां छोड़ आते हैं। इसी तरह से विकास के नाम पर जिस तरह से कंक्रीट

रिश्तेदार जुटते थे, पूजन-हवन होता था और फिर सहभोज तो होना ही था। आज परिस्थितियों में बदलाव आया है। गंगा-जमुना का यह पवित्र क्षेत्र आज आस्था से अधिक पर्यटन का केन्द्र बन गया है। लोग घूमने के बहाने जाते हैं। यहां तक तो ठीक कहा जा सकता है पर जिस तरह से प्रतिबंधित वस्तुओं खासतौर से प्लास्टिक और इसी तरह की सामग्री का कचरा केन्द्र बनाने से पर्यावरणीय प्रदूषण की समस्या आम हो गई है। लोग चंद घंटों के लिए जाते हैं और प्लास्टिक कचरा और अन्य सामग्री वहां छोड़ आते हैं। इसी तरह से विकास के नाम पर जिस तरह से कंक्रीट

रिश्तेदार जुटते थे, पूजन-हवन होता था और फिर सहभोज तो होना ही था। आज परिस्थितियों में बदलाव आया है। गंगा-जमुना का यह पवित्र क्षेत्र आज आस्था से अधिक पर्यटन का केन्द्र बन गया है। लोग घूमने के बहाने जाते हैं। यहां तक तो ठीक कहा जा सकता है पर जिस तरह से प्रतिबंधित वस्तुओं खासतौर से प्लास्टिक और इसी तरह की सामग्री का कचरा केन्द्र बनाने से पर्यावरणीय प्रदूषण की समस्या आम हो गई है। लोग चंद घंटों के लिए जाते हैं और प्लास्टिक कचरा और अन्य सामग्री वहां छोड़ आते हैं। इसी तरह से विकास के नाम पर जिस तरह से कंक्रीट

रिश्तेदार जुटते थे, पूजन-हवन होता था और फिर सहभोज तो होना ही था। आज परिस्थितियों में बदलाव आया है। गंगा-जमुना का यह पवित्र क्षेत्र आज आस्था से अधिक पर्यटन का केन्द्र बन गया है। लोग घूमने के बहाने जाते हैं। यहां तक तो ठीक कहा जा सकता है पर जिस तरह से प्रतिबंधित वस्तुओं खासतौर से प्लास्टिक और इसी तरह की सामग्री का कचरा केन्द्र बनाने से पर्यावरणीय प्रदूषण की समस्या आम हो गई है। लोग चंद घंटों के लिए जाते हैं और प्लास्टिक कचरा और अन्य सामग्री वहां छोड़ आते हैं। इसी तरह से विकास के नाम पर जिस तरह से कंक्रीट

रिश्तेदार जुटते थे, पूजन-हवन होता था और फिर सहभोज तो होना ही था। आज परिस्थितियों में बदलाव आया है। गंगा-जमुना का यह पवित्र क्षेत्र आज आस्था से अधिक पर्यटन का केन्द्र बन गया है। लोग घूमने के बहाने जाते हैं। यहां तक तो ठीक कहा जा सकता है पर जिस तरह से प्रतिबंधित वस्तुओं खासतौर से प्लास्टिक और इसी तरह की सामग्री का कचरा केन्द्र बनाने से पर्यावरणीय प्रदूषण की समस्या आम हो गई है। लोग चंद घंटों के लिए जाते हैं और प्लास्टिक कचरा और अन्य सामग्री वहां छोड़ आते हैं। इसी तरह से विकास के नाम पर जिस तरह से कंक्रीट

रिश्तेदार जुटते थे, पूजन-हवन होता था और फिर सहभोज तो होना ही था। आज परिस्थितियों में बदलाव आया है। गंगा-जमुना का यह पवित्र क्षेत्र आज आस्था से अधिक पर्यटन का केन्द्र बन गया है। लोग घूमने के बहाने जाते हैं। यहां तक तो ठीक कहा जा सकता है पर जिस तरह से प्रतिबंधित वस्तुओं खासतौर से प्लास्टिक और इसी तरह की सामग्री का कचरा केन्द्र बनाने से पर्यावरणीय प्रदूषण की समस्या आम हो गई है। लोग चंद घंटों के लिए जाते हैं और प्लास्टिक कचरा और अन्य सामग्री वहां छोड़ आते हैं। इसी तरह से विकास के नाम पर जिस तरह से कंक्रीट

रिश्तेदार जुटते थे, पूजन-हवन होता था और फिर सहभोज तो होना ही था। आज परिस्थितियों में बदलाव आया है। गंगा-जमुना का यह पवित्र क्षेत्र आज आस्था से अधिक पर्यटन का केन्द्र बन गया है। लोग घूमने के बहाने जाते हैं। यहां तक तो ठीक कहा जा सकता है पर जिस तरह से प्रतिबंधित वस्तुओं खासतौर से प्लास्टिक और इसी तरह की सामग्री का कचरा केन्द्र बनाने से पर्यावरणीय प्रदूषण की समस्या आम हो गई है। लोग चंद घंटों के लिए जाते हैं और प्लास्टिक कचरा और अन्य सामग्री वहां छोड़ आते हैं। इसी तरह से विकास के नाम पर जिस तरह से कंक्रीट

रिश्तेदार जुटते थे, पूजन-हवन होता था और फिर सहभोज तो होना ही था। आज परिस्थितियों में बदलाव आया है। गंगा-जमुना का यह पवित्र क्षेत्र आज आस्था से अधिक पर्यटन का केन्द्र बन गया है। लोग घूमने के बहाने जाते हैं। यहां तक तो ठीक कहा जा सकता है पर जिस तरह से प्रतिबंधित वस्तुओं खासतौर से प्लास्टिक और इसी तरह की सामग्री का कचरा केन्द्र बनाने से पर्यावरणीय प्रदूषण की समस्या आम हो गई है। लोग चंद घंटों के लिए जाते हैं और प्लास्टिक कचरा और अन्य सामग्री वहां छोड़ आते हैं। इसी तरह से विकास के नाम पर जिस तरह से कंक्रीट

रिश्तेदार जुटते थे, पूजन-हवन होता था और फिर सहभोज तो होना ही था। आज परिस्थितियों में बदलाव आया है। गंगा-जमुना का यह पवित्र क्षेत्र आज आस्था से अधिक पर्यटन का केन्द्र बन गया है। लोग घूमने के बहाने जाते हैं। यहां तक तो ठीक कहा जा सकता है पर जिस तरह से प्रतिबंधित वस्तुओं खासतौर से प्लास्टिक और इसी तरह की सामग्री का कचरा केन्द्र बनाने से पर्यावरणीय प्रदूषण की समस्या आम हो गई है। लोग चंद घंटों के लिए जाते हैं और प्लास्टिक कचरा और अन्य सामग्री वहां छोड़ आते हैं। इसी तरह से विकास के नाम पर जिस तरह से कंक्रीट

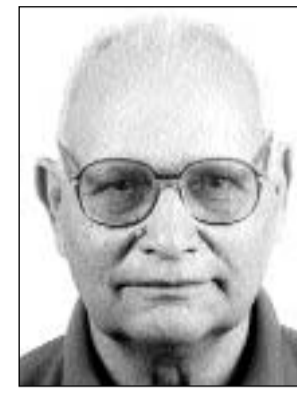
रिश्तेदार जुटते थे, पूजन-हवन होता था और फिर सहभोज तो होना ही था। आज परिस्थितियों में बदलाव आया है। गंगा-जमुना का यह पवित्र क्षेत्र आज आस्था से अधिक पर्यटन का केन्द्र बन गया है। लोग घूमने के बहाने जाते हैं। यहां तक तो ठीक कहा जा सकता है पर जिस तरह से प्रतिबंधित वस्तुओं खासतौर से प्लास्टिक और इसी तरह की सामग्री का कचरा केन्द्र बनाने से पर्यावरणीय प्रदूषण की समस्या आम हो गई है। लोग चंद घंटों के लिए जाते हैं और प्लास्टिक कचरा और अन्य सामग्री वहां छोड़ आते हैं। इसी तरह से विकास के नाम पर जिस तरह से कंक्रीट

रिश्तेदार जुटते थे, पूजन-हवन होता था और फिर सहभोज तो होना ही था। आज परिस्थितियों में बदलाव आया है। गंगा-जमुना का यह पवित्र क्षेत्र आज आस्था से अधिक पर्यटन का केन्द्र बन गया है। लोग घूमने के बहाने जाते हैं। यहां तक तो ठीक कहा जा सकता है पर जिस तरह से प्रतिबंधित वस्तुओं खासतौर से प्लास्टिक और इसी तरह की सामग्री का कचरा केन्द्र बनाने से पर्यावरणीय प्रदूषण की समस्या आम हो गई है। लोग चंद घंटों के लिए जाते हैं और प्लास्टिक कचरा और अन्य सामग्री वहां छोड़ आते हैं। इसी तरह से विकास के नाम पर जिस तरह से कंक्रीट

सुनते हो इन्टर से या बैट से मार मार कर चमड़ी उधेड़ दी - मालिक ने गुलाम की, दरोगा ने चोर की या मास्टर ने छात्र की। शरीर पर लाल उभरे निशान, लहलुहान उखड़ी हुई चमड़ी। इसी के समकक्ष है टॉक्सिक एपिडर्मल नेक्रोलाइसिस, (टी ई एन) एक प्रकार का भयंकर चमड़ी उधेड़ रोग। इसमें शरीर के अधिकांश सतह से चमड़ी की सतही परत (एपिडर्मिस) मर कर (नेक्रोलाइसिस) उखड़ कर अलग हो जाती है। ऐसा किसी दवा के सेवन से व्याप्त टोक्सिन से होता है। यह दवा के अधिक मात्रा में दिये जाने से या उसके साइड एफेक्ट के कारण नहीं, वरन्, हजारों या लाखों में से किसी एक में अकारण ही हो जाता है।

हाल ही का केस। भारतवंशी विदेशी एक महिला डाक्टर पति के साथ भारत आई। कोलकता पहुंची, गले का संक्रमण हुआ। हलका भुखार। डॉक्टर पति ने साधारण संक्रमण और भुखार के लिए एंटीबायोटिक, दर्द नाशक आदि दवायें दीं। दो सप्ताह ठीक ठाक चलता रहा। फिर बुखार तेज, चमड़ी पर लाल चकते उभर आये। डॉक्टर पति ने शहर के नामी फिजिशियन से संपर्क कर अपना परिचय दिया और घर आकर देखने को कहा। वे आये, महिला को देखा। लगा सामान्य वाइरल बुखार है, लाल चकते भी उसी के कारण हैं। कोई नई दवा नहीं दी। संक्रमण के निदान के लिए सभी टेस्ट लिख दिए। टेस्ट करवाये या नहीं, उनका क्या रिजल्ट रहा डॉक्टर पति ने हलका हलका संपर्क नहीं किया, स्वयं ही इलाज करते रहे। संपर्क किया तबियत खराब हो गई

है, शरीर पर लाल चकते फिर उभर आये हैं। फिजिशियन ने रोगी को क्लिनिक लाने के लिए कहा। रोगी, जांच की। रोगी ने बताया कि पिछली रात चाईनीज फूड खाया था उसी के बाद तबियत खराब हुई। शरीर पर सूजन, लाल चकते, लगा महिला एलर्जिक है और उसे एलर्जिक रिएक्सन हुआ है। निदान किया एंजियो न्यूरोटिक इडिमा विद वेस्कुलाइटिस ड्यू टू चाईनीज फूड। उन्होंने डॉक्टर पति से बात कर स्लो एंक्टिंग स्टेरॉइड का इन्जेक्शन लगा दिया, वही इन्जेक्शन दो दिन और लगवाने को कहा और लिख दिया। डाक्टर पति ने उसी रोज दो स्किन स्पेशलिस्ट को और दिखाया। चार दिन तक फिजिशियन से कोई संपर्क नहीं, क्या इलाज किया, क्या अवस्था रही कुछ नहीं बताया। पति स्वयं ही इलाज कर रहे, अन्य डॉक्टरों से सलाहा करा फिर फिजिशियन से संपर्क किया बताया हालत और खराब हो गई है। रोजेज बढ गये हैं। फिजिशियन को दूसरे रोज अमेरिका जाना था अतः वे इलाज अपने हाथ में नहीं ले सकते थे। डॉक्टर पति ने अपने एक सहपाठी डॉक्टर से संपर्क कर महिला को उसकी देख रेख में अस्पताल में भर्ती कर दिया। उस डॉक्टर ने फिजिशियन से संपर्क किया और कहा कि वे जाने से पहले मरीज को देख जायें। उन्होंने आकर मरीज को देखा। रोजेज फैलने के साथ साथ अब फफोले बन गये थे। रियेक्शन एलर्जिक हो रहा रहे थे अतः उन्होंने जल्दी काम करने वाला एक और स्टेरॉइड लिख दिया। अस्पताल के डॉक्टर को अपनी सलाह दी और अस्पताल के



डॉ. श्रीयोगपाल काबरा

फिजिशियन को मरीज की चिकित्सा अपने हाथ में लेने के लिए लिखा। महिला का डॉक्टर पति मौजूद था और सारी चिकित्सा अपनी इच्छा अनुरूप करवा रहा था। शाम को दो चर्म रोग विशेषज्ञों को देखने को बुलाया। उन्होंने अपने हिसाब से इलाज की सलाह लिखी, डॉक्टर पति को बताया।

टी ई एन एक क्लिनिशियन विरला रोग है। कारण ही नहीं पता तो निवारण कैसे हो। कोई मान्य इलाज नहीं है। सभी अपनी अपनी समझ के हिसाब से सिम्प्टोमेटिक उपचार करते हैं। रोग घातक। रोगी स्वयं डॉक्टर पति अमेरिका का पैसे वाला डॉक्टर अपने हिसाब से अपने अनुसार सब इलाज करवा रहे थे। शहर के सभी नामी चर्मरोग विशेषज्ञों को बुलाया, उनसे राय लिखवाई, परामर्श किया। आंखों के विशेषज्ञ, मुंह व गले के विशेषज्ञ, प्लास्टिक सर्जन, स्त्री रोग विशेषज्ञ - रोग एक ही लेकिन उसके अलग अलग

हजारों या लाखों में से किसी एक में दवा के सेवन से व्याप्त टॉक्सिन से यह रोग होता है

स्थानीय लक्षणों के इलाज के लिए अलग विशेषज्ञ। कुल मिला कर दर्जन से ऊपर डॉक्टरों को पति ने बुलाया। सबने अपनी अपनी सलाहा अपने-अपने इलाज लिखे। पति ने किस की सलाहा मानी किसकी नहीं, कुछ पता नहीं। पेशेंट फाइल में कुछ भी लिखा हो महिला को वही दिया गया जो पति ने कहा। बिना उनकी अनुमति के तो पेशेंट को कोई देख भी नहीं सकता था कुछ करने की बात तो दूर। पांच दिनों में हालात खराब हो गई। पति हवाई एम्बुलेंस से महिला को मुम्बई के नामी अस्पताल ले गये। वहां भी पति ने दादागिरी दिखाई। वरिष्ठ नामी चिकित्सक को स्वेच्छा से इलाज नहीं करने दिया। रोग घातक था, रोगी नहीं बची।

डॉक्टर पति ने कोलकता और मुंबई के इलाज करने वाले सभी छव्वीस डॉक्टरों के खिलाफ केस ठोक दिए। 77 करोड़ का खर्चा मांगा। ऐसा लगा जैसे वह अपनी पत्नी का इलाज इसी लक्ष्य के लिए करवा रहा था। उसने सारे इलाज को वैसे ही अपने स्वार्थ पूर्ण अहं तुष्टी के लिए मनुपुलेट किया जैसे मनोप्रीति ग्रस्त मनचाउसेन सिंड्रोम बाई प्रोक्सी का व्यक्ति करता है। फिर मैडिकल काउंसिल में शिकायत की, सिविल केस, क्रिमिनल केस, उनके निर्णय के खिलाफ नेशनल कमीशन,

हाई कोर्ट, सुप्रीम कोर्ट। प्रेस कान्फ्रेंस, फेस बुक, सोशल साइड पर प्रचार किया। इसके लिए उसने पहले से ही सब तैयारी कर रखी थी। सारा इलाज मनुपुलेट और मेनेज किया था। स्वयं विशेषज्ञ डॉक्टर था, उसें अंदाज था घातक रोग का अंजाम क्या होगा। वह तो इसका इन्तजार ही कर रहा था, अपने लक्ष्य पूर्ण के लिए अपने आपको शहीद के रूप में प्रचारित कर अपने अहं की पुष्टी की। सब जगह अपने पर फोकस, केन्द्र में बने रहने की चेष्टा।

जब विशेषज्ञ डॉक्टर, जो रोग की बारीकियों को समझने की क्षमता रखते हैं, उनके ही यह रोग समझ से परे था तो विधि विशेषज्ञों द्वारा इसे समझने की चेष्टा तो अनाधिकार ही कही जायगी। किसी भी तथ्य को ले कर न डॉक्टरों में सहमती थी न विधि विशेषज्ञों में। नतीजा, अलग-अलग धारणा, अनुभव, और निर्णय। 26 डॉक्टर 52 विधि विशेषज्ञ और एक पैसे वाला अमेरिकन। कहावत है कानून गधे के समान होता है, जिसे उसका कान पकड़ कर हांकना आता है, वह उधर ही चल देता है। अमेरिकन डॉक्टर ने इसका भरपूर लाभ उठाया। मनचाउसेन सिंड्रोम बाई प्रोक्सी से ग्रसित व्यक्ति की तरह उसने बड़े नियोजित ढंग से सारा केस मनुपुलेट किया और अपने लक्ष्य प्राप्ति में अंततः सफल हुआ। चमड़ी उधेड़ रोग का इलाज करने वाले डॉक्टरों की चमड़ी उधेड़ दी। करोड़ों का मुवाबजा लिया।

-डॉ. श्रीयोगपाल काबरा, वरिष्ठ चिकित्सक, जयपुर

चम्बल नदी किनारे मगरमच्छ ले रहे सन बाथ

धौलपुर, (निर्स)। सर्दियों में चंबल नदी में जलीय जीवों की अठखेलियां शुरू हो गई हैं। धौलपुर से होकर गुजरने वाली चंबल नदी में गुरुवार सुबह घड़ियाल और मगरमच्छ की अठखेलियों के साथ नदी किनारे कछुए भी धूप संकेते नजर आए। चंबल नदी में जलीय जीवों को

इस बार चम्बल में घड़ियाल और मगरमच्छ के साथ डॉल्फिन भी नजर आने लगी हैं

अठखेलियों को देखने के लिए पर्यटक भी पहुंचना शुरू हो चुके हैं। जिनके लिए नगर परिषद ने 3 वोट शुरू कर दी हैं। जिनके जरिए पर्यटक नदी के 6 किलोमीटर तक दोनो जलीय जीवों की अठखेलियों को निहार सकते हैं।

वन्य जीव प्रेमी मुजा लाल निघाद ने बताया कि चंबल नदी एक बार फिर से गुलजार है। सुबह नदी में मगरमच्छ



सर्दी बढ़ने के साथ चंबल किनारे अठखेलियां कर रहे घड़ियाल और मगरमच्छ।

और घड़ियाल एक दूसरे के साथ रेस करते हुए दिखाई दिए। तो वहीं सांपटसेल कछुआ भी नदी किनारे सन बाथ करते हुए नजर आए। उन्होंने बताया कि इस

बार नदी में घड़ियाल और मगरमच्छ के साथ डॉल्फिन भी नजर आने लगी है। जो पूर्व में नदी में गंदा पानी होने की वजह से पिंड की ओर चली गई थी।

इस बार स्वच्छ और साफ पानी होने की वजह से डॉल्फिन एक बार फिर से वापस धौलपुर की ओर आ चुकी हैं। चंबल नदी में 100 साल से अधिक

पुराने कछुओं के साथ 10 से 12 फीट के घड़ियाल और मगरमच्छ भी देखने को मिल रहे हैं। जिन्हें देखने के लिए दूर-दूर से पर्यटक धौलपुर पहुंच रहे हैं।

करीब पांच हजार आर.सी. और इतने ही लाईसेंस अटके

अलवर, (निर्स)। अलवर आरटीओ ऑफिस में कार्ड बनाने का कच्चा माल व संसाधन नहीं होने से वाहनों की आरसी एवं लाईसेंस नहीं बनने से आम आदमी को भारी परेशानी हो रही है। इस संदर्भ में जब आरटीओ और डीटीओ से बात की तो उन्होंने भी हाथ खड़े कर दिए और कहा कि, इस समस्या का निदान उनके पास अभी नहीं है, क्योंकि यह समस्या अलवर ही नहीं पूरे राजस्थान में हो रही है। अलवर आरटीओ ऑफिस में विगत कई दिनों से आरसी और लाईसेंस जमाता को नहीं मिल पा रहे हैं जिससे आम नागरिकों को भारी समस्या हो रही है। इस संदर्भ में जब आरटीओ रानी जैन और डीटीओ प्रवर्तन ललित कुमारा गुप्ता से बात की तो उन्होंने स्वीकारा की यह समस्या अलवर की ही नहीं अपितु पूरे

राजस्थान की है। एमटेक कंपनी जिसके पास राजस्थान का लाईसेंस और आरसी प्रिंट का ठेका है उसके पास कार्ड बनाने का कच्चा माल व संसाधन उपलब्ध नहीं है जिसके कारण आरसी और लाईसेंस प्रिंट नहीं हो पा रहे हैं। उन्होंने बताया कि इस समस्या के निदान के लिए हमने जयपुर उच्च अधिकारियों को बार-बार लिखा है, लेकिन अभी तक इस समस्या का समाधान नहीं हो पाया है। कुल मिला कर दोनो अधिकारियों ने इस समस्या का निदान करने से अपने हाथ खड़े कर दिये क्योंकि जब इस समस्या का उच्च अधिकारी हल नहीं हूँ पाए वे तो उन्हें सिर्फ अपनी शिकायत ही दर्ज करा सकते हैं फिलहाल अलवर में वाहन आरसी करीब पांच हजार और इतने ही लाईसेंस लंबित चल रहे हैं।

‘विवेकानंद के शिकागो से खेतड़ी लौटने पर 40 मण देसी घी के लिए जलवाए थे’

खेतड़ी, (निर्स)। शिकागो विश्व धर्म सम्मेलन में सनातन धर्म का परचम सहराने के बाद भारत लौट कर आए स्वामी विवेकानंद का खेतड़ी में 12 दिसंबर 1897 को खेतड़ी नरेश राजा अजीत सिंह ने भव्य स्वागत किया था तथा 40 मण देसी घी के लिए जलाकर पूरे कस्बे को रोशन किया गया था। उन्ही यादों को पिछले 12 वर्षों से लगातार खेतड़ी के रामकृष्ण मिशन आश्रम के सचिव स्वामी आत्मानिष्ठानंद महाराज के सानिध्य में विरासत दिवस समिति व कस्बेवासियों के द्वारा विरासत दिवस मनाया जाता है। इसी को लेकर 12 दिसंबर को आयोजित होने वाले विरासत दिवस की

12 दिसंबर 1897 को खेतड़ी नरेश राजा अजीत सिंह ने भव्य स्वागत किया था

तैयारियां कस्बे में जोर-शोर से चल रही है। गुरुवार को रामकृष्ण मिशन आश्रम के वॉलेंटियर मुख्य बाजार में व्यापारियों को निमंत्रण देते नजर आए। इस दौरान मोहन सैनी, गौवर्धन खींची ने बताया कि युगांतकारी स्वामी विवेकानंद ने जब शिकागो विश्व धर्म सम्मेलन में ‘भेरे अमेरिकी भाइयों बहनों’ कहकर पूरे सदन को तालियां बजाने के लिए मजबूर कर दिया था और पूरे विश्व

में भारत की संस्कृति व अध्यात्म को ओर ध्यान आकर्षित किया था। 12 दिसंबर 1897 को स्वामी विवेकानंद शिकागो विश्व धर्म सम्मेलन से खेतड़ी आने, उनका महाराजा अजीत सिंह द्वारा भव्य स्वागत करने की याद को ताजा करने को लेकर खेतड़ी के लोग विरासत दिवस मनाते हैं। हर वर्ष की भांति सुबह स्कूली बच्चे प्रभात फेरी निकालेंगे। दोपहर को राजा अजीत सिंह स्वामी विवेकानंद की सजीव झांकियां निलाली जाएंगी तथा पत्रा सारार तालाब पर सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया जाएगा। इस मौके पर मोहित सैनी, विकास कुमावत, कुलदीप खींची, अभिषेक बबरवाल मौजूद रहीं।

त्रिदेवों के अंश भगवान दत्तात्रेय

पौराणिक कथानुसार ब्रह्माजी के मानस पुत्र सप्त ऋषियों में से एक महर्षि अत्रि व प्रजापति कर्दम ऋषि की पुत्री और सांख्यशास्त्र के प्रवर्तक कपिल देव की भगिनी सती अनुसूया के यहां त्रिदेवों के अंश से तीन पुत्र सबसे पहले ऋषि अत्रि, फिर चन्द्रदेव उसके बाद दत्तात्रेय ने जन्म लिया। चूंकि भगवान दत्तात्रेय को शैवपंथी प्रभु शिव का अवतार तो वैष्णव पंथी प्रभु विष्णु का अंशावतार मानते हैं और सती अनुसूया की पति-भक्ति के कारण उनकी सतियों की गणना में सबसे पहले होती है इसलिए कुछ लोगों का यह स्वाभाविक प्रश्न हो जाता है कि फिर ये इनके पुत्र कैसे हुये। इसलिये एक जिज्ञासा के समाधान हेतु इस घटना से आप सभी को अवगत करा रहा हूँ जिसके चलते इनका जन्म सती अनुसूया के गर्भ से हुआ। वह घटना इस प्रकार है - एक बार ब्रह्माणी, विष्णुवक्त्र व गौरी में यह जानने की प्रबल इच्छा जागी कि सर्वश्रेष्ठ पतिव्रता कौन है? जब यह

निर्णय हो गया कि अत्रि पत्नी अनुसूया इस समय न केवल सर्वश्रेष्ठ पतिव्रता है बल्कि सतियों की गणना में भी वे पहले स्थान पर हैं तब इन तीनों ने अपने-अपने स्वामियों से भूलोक जा कर पतिव्रता अनुसूया की परीक्षा लेने का आग्रह किया। इस आग्रह के परिणामस्वरूप तीनों देव अर्थात् ब्रह्मा, विष्णु व महेश ब्राह्मण वेश धारण कर महर्षि अत्रि के आश्रम उस समय पहुंचे जब महर्षि आश्र